— प्राक्कथन —

प्राक्कथन

जब मैं एम॰ए॰ में पढ रहा था, उसी समय मुझे हरिशंकर परसाई जी की "पगडंडियों का जमाना" नामक पुस्तक पढने को मिली। "पगडंडियों का जमाना" नामक निबंध संग्रह के निबंध मुझे बहुत अच्छे लगे क्योंकि आज समाज के हर वर्ग के लोग सीधे रास्ते से न जा कर पगडंडियों के जमाने से गुजर रहे हैं। निबंधों को पढकर ऐसा लगा कि जिन विसंगतियों को हम अपने जीवन में देखते हैं, उन्हीं विसंगतियों को उन्होने अति बारीकी-से देख, परखकर अपने निबंधों में चित्रित किया हैं। उसी समय मुझे उनके शीर्षस्थ व्यंग्यकार होने का एहसास हुआ और उसी वक्त अपने मन में मैंने यह निश्चय कर लिया कि मैं हरिशंकर परसाई जी के निबंधों पर ही शोध कार्य करूँगा, यदि यह करने का मुझे मौका मिला। ईश्वर की कृपा से मैने एम॰ए॰ की परिक्षा अच्छे अंकों से पास की और साथ ही मुझे एम॰फिल॰ हिन्दी में भी प्रवेश मिल गया। विषय तो मेरे मन में था ही, इसीलिए मैने अपनी शोध निर्देशिका प्रा॰डा॰सौ॰ शशिप्रभा जैन जी से इस विषय पर चर्चा की और उन्होने भी प्रसन्नता पूर्वक मुझे इसकी अनुमति दे दी। और इस प्रकार से मेरा शोध कार्य प्रारंभ हुआ। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में समाज की नाना प्रकार की विसंगतियों को दिखाने का मैंने प्रयास किया हैं।

परसाई जी के कुल निबंध संग्रहों में से कुछ ही निबंध संग्रहों को कुछ आलोचकों ने कहानी संग्रह मान लिये हैं तो कुछ आलोचक उन्हे निबंध संग्रह ही मान लेते हैं, मैने अपने अध्ययन की सुविधा के लिए उन्हे निबंध संग्रह के अंतर्गत ले लिया हैं।

मेरे लघु-शोध प्रबंध का विषय हैं "हरिशंकर परसाई जी के निबंधों में व्यंग्य एवं विभिन्न समस्याएँ।" हरिशंकर परसाई जी के निबंधों में व्यंग्य एवं समस्याएँ ढूंढना इस लघु-शोध-प्रबंध का प्रधान लक्ष्य रहा हैं।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैने इस लघु-शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में बाँटा हैं।

मेरे लघु-शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय में हरिशंकर परसाई जी के जीवन का संक्षेप में परिचय दिया है। उनका जन्म, शिक्षा, पारिवारिक जीवन, वे कौनसे कारण है, जिनके कारण परसाई जी साहित्य साधना की ओर मुड गये आदि की चर्चा करते हुए, उनकी विविधायामी साहित्य रचना पर प्रकाश डाला हैं। इस प्रयास में परसाई जी के विशिष्ट व्यक्तित्व का परिचय करना प्रमुख उद्देश्य रहा हैं।

मेरे लघु-शोध-प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय "व्यंग्य से तात्पर्य" का सम्यक् विवेचन किया हैं। व्यंग्य का स्वरूप, महत्व और प्रयोजन, व्यंग्य का जन्म या उद्भव, व्यंग्य शब्द का अर्थ, व्यंग्य की परिभाषा, परिभाषा संबंधी विशेषताएं व्यंग्य के विविध रूप, हास्य और व्यंग्य में परस्पर अंतर, हिन्दी साहित्य में व्यंग्य लेखन की परम्परा, व्यंग्य के प्रकार आदि उपशीर्षकों के अंतर्गत प्रस्तुत अध्याय का विवेचन किया हैं, और इन उपशीर्षकों का अंत में सार दे दिया हैं।

मेरे लघु-शोध-प्रबंध का तृतीय अध्याय शीर्षक "हरिशंकर परसाई जी के निबंधों में व्यंग्य" में उनके निबंधों में व्यक्त व्यंग्य की विविधता दिखाने का प्रयास किया हैं। परसाई जी के निबंधों को पढने के बाद जो व्यंग्य की विविधता दिखाई दी, उसे इस अध्याय में अभिव्यक्त किया हैं। वर्तमान समाज में पायी जानेवाली विसंगतियों को अपने व्यंग्य निबंधों द्वारा व्यक्त करने की कोशिश परसाई जी ने की हैं।

"हरिशंकर परसाई जी के निबंधों मे चित्रित विभिन्न समस्याएँ" शीर्षक लघु-शोध-प्रबन्ध का चतुर्थ अध्याय हैं और मेरे लघु-शोध-प्रबंध का महत्वपूर्ण अध्याय हैं, जिसमें परसाई जी ने व्यंग्य के माध्यम से समाज की विभिन्न समस्याओं को अपनी नजर से देखा हैं, इन सभी समस्याओं का विवेचन मैने इस अध्याय में किया हैं।

पंचम अध्याय उपसंहार का रहा है, जो मेरे संपूर्ण लघु-शोध-प्रबंध का निचोड़ है। प्रस्तुत-लघु-शोध-प्रबंध में मुझे क्या नया ज्ञान मिला, इसका उल्लेख किया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को मै पूर्ण नहीं कह सकता, यह तो शोध-पथ पर चलने का मेरा पहला कदम है। मैं चाहता हूँ, अपने प्रिय लेखक हरिशंकर परसाई जी के सभी कृतियों को पढ़कर उन्हे आत्मसात करके उनपर व्यापक शोध-कार्य करूँ।

अंत में सहायक ग्रंथों की सूची जोड दी है, जो शोध प्रबन्ध की निर्मिती में विशेष सहायक रही है।

.....

ऋण निर्देश

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध को मैं पूरा कर पाया इसका श्रेय मेरे आदरणीय गुरुवर्य मार्गदर्शिका प्रा.डॉ.सौ. शशिप्रभा जैन जी को हैं। उनके मार्गदर्शन के लिए मैं अत्यन्त ऋणी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के भूतपूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डा. व्ही.के. मोरे जी तथा भोगावती महाविद्यालय के प्राचार्य प्रा. एस.टी. जाधव जी ने मुझे काफी सहायता की उसके लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। भोगावती महाविद्यालय के प्रा. आय.आर. मोरे जी ने मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहित किया, इसलिए उनका आभार मानना मेरा कर्तव्य हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को पूरा करने से मेरे-माता-पिता एवं भाई-बहन, साथ ही मेरे मित्र - किसन डेकेकर, मानसिंग, सुरेश, दिलीप, किरण, आनंदा, श्रीकांत, राजेन्द्र पाटील, भिमराव कोईगडे आदि को जितना सन्तोष और हर्ष मिला हैं उसको मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता, यह उनके आशिर्वाद का ही प्रसाद हैं। राधानगरी महाविद्यालय के प्राचार्य और मेरे सभी सहकारी मित्र उनका भी मैं आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध पूरा करने के लिए मुझे सामग्री उपलब्ध करा देने में शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल तथा भोगावती महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री कुलकर्णी जी का सहकार्य अपेक्षित रूप से मिला, इसलिए उनको भूलना मेरे लिए कठिन होगा। शोध-प्रबन्ध का टंकन कार्य श्री सुधाकर भोसले जी ने यथा समय पूरा किया हैं, उनका भी मैं आभारी हूँ। भविष्य में भी इन सभी लोगों से आशीर्वाद तथा सहयोग की कामना रखते हुए मैं अपना यह लघु-शोध-प्रबन्ध अवलोकन के लिए समीक्षकों के सामने रखता हूँ।

आपका कृपापार्थ,

कोल्हापुर।

दि. १२ दिसंबर १९९४.

श्री ~~एकनाथ~~ श्रीपती पाटील.